B.A-I (Hon)
Paper - I
Unit - I Topic - Demerits of Experimental method

प्रयोगात्मक विधि के दोष

प्रयोगात्मक विधि के प्रमुख दोष निम्नांकित है –

(i) प्रयोगात्मक विधि का सबसे महत्वपूर्ण दोष यह बतलाया गया है कि प्रयोग की नियंत्रित अवस्था वास्तविक न होकर कृत्रिम होती है। फलस्वरूप इसका संबंध जीवन के वास्तविक परिस्थिति से कम होता है। इसलिए प्रयोगात्मक विधि से प्राप्त निष्कर्ष का सामान्यीकरण वास्तविक परिस्थिति के लिए सम्भव नहीं है। मार्गन, किंग तथा रॉबिन्सन ने भी ऐसा ही विचार व्यक्त किया है, "प्रयोग से प्राप्त निष्कर्ष कृत्रिम प्रयोगात्मक परिस्थिति तक सीमित है तथा इसका सामान्यीकरण वास्तविक या स्वाभाविक परिस्थिति के व्यवहारों के बारे में नहीं की जा सकती है।"

(ii) प्रयोगात्मक विधि में कुछ विशेष प्रकार का दोष स्वाभाविक रूप से सम्मिलित होता है। प्रयोक्ता पूर्वाग्रह ~~क्रम~~ में प्रयोगकर्ता या प्रयोक्ता की अपनी उम्मीद या प्रत्याशाएँ, पक्षपात आदि प्रयोग के परिणाम तथा प्रेक्षण प्रक्रिया को प्रभावित करता है। प्रतिदर्श पूर्वाग्रह से तात्पर्य प्रयोज्यों को प्रतिनिधिक न होने से होता है। कभी-कभी ऐसा देखा गया है कि प्रयोगकर्ता को जो भी व्यक्ति, सुविधानुसार मिल रहा है, सभी को वह प्रयोज्य बना लेता है। इसका परिणाम यह होता है कि प्रयोज्य उस समूह का प्रतिनिधित्व नहीं करते जिनके बारे में प्रयोग करके पूर्वकथन करना होता है। इतना ही नहीं, कभी-कभी यह भी देखा गया है कि प्रयोग में प्रयोगात्मक समूह तथा नियंत्रित समूह तुल्य नहीं होते है। फलतः उसका परिणाम वैध तथा विश्वसनीय नहीं हो पाता है।

(iii) कुछ प्रयोग ऐसे होते हैं जिन्हें पशु पर तो किया जा सकता है परन्तु मनुष्यों पर नहीं किया जा सकता है। इसका परिणाम यह होता है कि प्रयोगात्मक विधि का कार्य-क्षेत्र सीमित हो जाता है। उदाहरणार्थ, यदि प्रयोग ऐसा है कि उसमें शरीर का कोई अंग जैसे मस्तिष्क का ही एक विशेष अंग को काटकर निकाल देना है और उसका प्रभाव व्यवहार पर क्या पड़ता है, यह देखना है तो

मनुष्य के साथ इस ढंग का प्रयोग करना अनैतिक माना जायेगा और शायद कोई मनुष्य ऐसा करवाने के लिये तैयार भी नहीं होगा परन्तु पशुओं के साथ आसानी से इस तरह का प्रयोग किया जा सकता है और किया जा भी रहा है। पशुओं के अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष को मनुष्यों के लिये भी सही मान लिया जाता है, हालांकि इसमें कुछ त्रुटि की सम्भावना बनी रहती है।

इन दोषों के बावजूद भी प्रयोगात्मक विधि मनोविज्ञान की सबसे वैज्ञानिक विधि मानी गयी है। ~~आज मनोविज्ञान में~~